29

भूगोल की कक्षा का मेरा एक अनुभव

तपस्या साहा

मैं सन 1965 में कोलकाता के सेण्ट मेरीज कॉन्वेण्ट में कक्षा 5 में पढ़ती थी। हमारी भूगोल की कक्षा चल रही थी। श्रीमती शान्ति नंदी हमारी भूगोल की शिक्षिका थीं। उस स्कूल में हम सब अपने शिक्षकों को 'टीचर' कहा करते थे।

वह साप्ताहिक रूप से होने वाली 'मानचित्र रचना' की कक्षा थी; हम सबने अपनी मानचित्र पुस्तिका, एटलस पेंसिल और रबर निकाल लीं। (उन दिनों बस हाथ से मानचित्र बनाना अनिवार्य था)।

उनकी कक्षाएँ हमेशा रोचक हुआ करती थीं; दुनिया के अलग–अलग भागों की उनकी वे कहानियाँ, जो 'चॉप स्टिक' को कक्षा तक ले आती थीं, और 'एक पैसे के तांबे के सिक्के' का इनाम, उनकी कक्षा की ऐसी कुछ चीजें थीं जो मुझे याद हैं।

वे कक्षा में आकर बैठ गईं। उन्होंने पिछले दो महीनों से भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा पर कश्मीर में किसी स्थान पर भारत और पाकिस्तान के बीच चल रही लड़ाई की बात की। हम सभी को इस बारे में पता था, क्योंकि घर पर हमने अखबारों की कतरनें काट कर रखी हुई थीं। मेरी दीदी ने उन्हें खिड़की के शीशे पर चिपका दिया था ताकि यदि पाकिस्तानी विमानों द्वारा बमवर्षा हो तो कोई हताहत न हो; हम उन दिनों में कर्फ्यू और ब्लैकआउट के बारे में जानते थे। पर टीचर ने कुछ ऐसी बात की जिसके बारे में हमने कभी नहीं सोचा था। उन्होंने हमसे एटलस निकालकर वह पेज खोलने को कहा जिस पर भारत और पाकिस्तान, दोनों देश दिख रहे हों। फिर उन्होंने दोनों देशों के बीच की सीमा की तरफ इशारा किया।

मेरे दिमाग में लड़ाई के सारे चित्र खिंच गए जब उन्होंने उस क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन किया। एक क्षण को मुझे लगा कि मैं दूर बैठी उनकी बातें नहीं सुन रही थी, बल्कि अपनी कल्पना में उस क्षेत्र में ही पहुँच गई थी।

इसके बाद उन्होंने जो बताया वह बहुत रोचक था। उन्होंने हमसे सीमा पर तैनात जवानों के लिए चिट्ठी लिखने को कहा। उन्होंने कहा, "तुम लोगों को जैसा समझ आए वैसा लिखना। यह ध्यान रखना कि आधा सितम्बर बीत चुका है और इस समय हिमालय में बहुत ठण्ड होगी, सारे जवान अपने चूल्हों से कहीं दूर, अपने परिवारों से कहीं दूर, रूखे और बंजर सर्द बर्फ से ढके पहाड़ों पर हैं।" हम सब लिखने बैठ गए, मुझे याद है कि मैंने जवानों को 'प्यारे जवान दादा…' कहकर सम्बोधित किया था।

इन चिट्ठियों के साथ टीचर ने पत्रिकाएँ भेजने का भी निर्णय लिया। मुझे याद है कि मैं घर से 'इलस्ट्रेटेड वीकली' के कुछ अंक इस उद्देश्य के लिए बटोरकर स्कूल ले गई थी।

उस दिन, उस कक्षा में मेरी टीचर का उद्देश्य जो भी रहा हो, एक बात तो पक्की है कि उन्होंने 'स्थान और मानव सम्बन्ध' का सिद्धान्त हमेशा के लिए हमारे दिमाग में बैठा दिया था।

टीचर के बारे में: वे दुनिया के कई हिस्सों में जा चुकी हैं। उनके पति द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के समय में एफ.आर.सी.एस. डॉक्टर थे। कई स्थानों पर घूमने के बाद आखिरकार वे कलकत्ता में टॉलीगंज स्थित हमारे स्कूल के पास बस गईं। उन्होंने मूक और बधिरों को पढ़ाने का प्रशिक्षण लिया था और बाद में वे कलकत्ता में 'डेफ एण्ड डम्ब स्कूल' में शिक्षिका हो गई थीं।

तपस्या साहा, *सदस्य, स्कूल्स कोर टीम, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बंगलौर। उनसे tapasya@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद:*** *भरत त्रिपाठी*